دسمبر ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تبارَکَ وَتَعالیٰ قَدْ جاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

صلی اللہ علیک

یابنتَ امیر المؤمنین

یا زینب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

December 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

सम्पादन समिति

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

एक साल के लिए : 200/-रू0
पांच साल के लिए : 800/-रू0
लाइफ़ मेम्बरशिप : 4000/-रू0

विषय सूची

दिसम्बर 2013ई०
मुहर्रम व सफ़र 1435हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
l Eiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

½fd'r %17½

जब ख़ुदा का कोई मिस्ल/उपमा नहीं तो इसके माने यह हैं कि उसका कोई बेटा नहीं । तीसरी तरफ़ हर वह मज़हब ग़लत साबित होता है जो ख़ुदा के किसी निजी कमाल (पूरेपन) में दूसरी चीज़ों की मिस्ल ठहराए चाहे क़दामत (बिल्कुल शुरू से होना) के लेहाज़ से माद्दे (Matter) और रूह को ख़ुदा का मिस्ल बनाना जो आर्यो का विश्वास है। या इल्म/ज्ञान और क़ुदरत (सकत) जैसे गुणों को उसकी ज़ात के अलावा समझना यानी यह समझना कि यह सिफ़तें ख़ुदा की ज़ात से अलग हैं और पहले से मौजूद हैं। जैसा कि बहुत सी इस्लामी जमाअत (वर्ग) अपनी नादानी की वजह से इस बात की क़ायल हो गई हैं। इन सबको ग़लत साबित करने के लिए यह वाक्य "*व–लम् य–कुल्लहू कुफ़ु अन् अ–हद*" काफ़ी है।

'kjh;r esa lwjg 'dqYgqoYykg dh [kkl ckr

ये पहले कहा जा चुका है कि *'कुल्हुवल्लाह'* को एक तिहाई (1/3) क़ुर्आन का दरजा मिला हुआ है मगर ये सूरह के मानी, मतलब और फ़ज़ीलत श्रेष्ठता के लेहाज़ से है, इसका असर शरीयत के हुक्मों पर नहीं पड़ता, यानि अगर कोई क़ुर्आने मज़ीद पढ़ने की नज़्र/मन्नत माने या उसे परिश्रमिकी पर क़ुर्आन पढ़ना हो तो उसे तीन मर्तबा *कुल्हुवल्लाह* पढ़ लेना हरगिज़ काफ़ी नहीं होगा। फिर भी *'कुल्हुवल्लाह'* को शरीयत के हुक्मों के लेहाज़ से कुछ ख़ास अहमियत है। नमाज़ में अगर सूरह हम्द के बाद सूरह *'कुल्हुवल्लाह'* पढ़ना चाहता हो और इत्तेफ़ाक़ से कोई दूसरा सूरह शुरू कर दे तो उस सूरह को छोड़ कर *'कुल्हुवल्लाह'* पढ़ सकता है, लेकिन अगर कोई और सूरह पढ़ना चाहता था और इत्तेफ़ाक़ से 'कुल्हुवल्लाह' शुरू कर दे तो फिर उसे बीच में छोड़ के कोई दूसरा सूरह नहीं पढ़ सकता। इसके मानी ये हैं कि ये हर सूरह की जगह ले सकता है, मगर कोई दूसरा सूरह इसकी जगह नहीं ले सकता। मगर याद रहे कि ये बात उसी वक़्त सही होगी जब वह अपनी जगह पर हो यानि सूरह हम्द के बाद हो लेकिन अगर सूरह हम्द की जगह ग़लती से सूरह 'कुल्हुवल्लाह' शुरू कर दे तो उसे बीच में छोड़ कर सूरह 'हम्द' पढ़ना ज़रूरी है क्यों कि वह सूरह हम्द' की जगह हरगिज नहीं ले सकता। सूरह 'हम्द' अपनी ख़ासियत में अकेला है और 'कुल्हुवल्लाह' को भी वह ख़ासियत नहीं है।

ये सूरह *'कुल्हुवल्लाह'* की अहमियत ही है कि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने उसे एक सांस में पढ़ने को नापसंद ठहराया है।

कुछ सूरो के पढ़ने के बाद कुछ मुस्तहब (सुन्नत) वाक्यों का पढ़ना

सूरों को पढ़ने में ध्यान को बाक़ी रखने के लिए और उसका इन्सान के दिल पर जो असर पड़ता है उसके ज़ाहिर करने के लिए क़ुर्आन के कई सूरों को पढ़ने के बाद कुछ बोल कहने को कहा गया गया है, जिनकी बातें मासूम इमामों (अ0) की हदीसों में मौजूद है और इमाम (अ0) ख़ुद उस पर चलते थे। उन वाक्यों और शब्दों को नीचे बयान किया जा रहा है जिनका पढ़ना कुछ सूरों के बाद 'मुस्तहब' (सुन्नत) है।

सूरह *'कुल्हुवल्लाह'* के बारे में इमाम रिज़ा (अ0) का तरीक़ा था कि जब आप पहली आयत, *'कुल्हुवल्लाहों अ–हद'* पढ़ते थे, जिसका मतलब ये हुआ कि ख़ुदा का हुक्म बन्दे को, कि कहो, वह अल्लाह एक है, तो आप इस हुक्म की तामील में आहिस्ता से कहते थे *'कुल्हुवल्लाहु अ–हद'*, और सूरह ख़त्म करने के बाद तीन मर्तबा कहते थे, *"कज़ालि–क*

रब्–बना'', ये बन्दे की तरफ़ से उस हुक्म की सच्चाई में कहना है कि सूरह *'कुल्हुवल्लाह'* में ख़ुदा के जो गुण बयान हुए है, वह असल में उसी तरह हैं। इस बारे में बहुत सी हदीसों में यह पहली हदीस थी। दूसरी हदीस इमाम रिज़ा (अ0) की है, अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहतदी ने आपसे 'तौहीद' (ईष्वर का एक होना) के बारे में पूछा। हज़रत (अ0) ने कहा, जो 'कुल्हुवल्लाहु अ–हद'' का सूरह पढ़ ले और उस पर ईमान (विश्वास) लाए, उसने 'तौहीद' को समझ लिया। उसने कहा, इस सूरह को पढ़ने का तरीक़ा क्या होना चाहिए? हज़रत (अ0) ने फ़रमाया कि कोई ख़ास तरीक़ा नहीं, जैसे पढ़ा जाता है, हाँ बाद में दो मर्तबा ''कज़ालिकल्लाहु रब्बी'' का बोल आपने बढ़ा दिया। इस हदीस को 'कुलैनी' ने अपने उस्ताद से और 'सद्दूक़' ने 'किताबुत्तौहीद' में लिखा है।

तीसरी हदीस इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की है, जिसमें आप (अ0) ने अपने वालिद/पिता इमाम मो0 बाक़र (अ0) का चलन बयान किया है कि जब आप(अ0) सूरह *'कुल्हुवल्लाह'* की तिलावत (पाठ) कर चुके होते थे तो कहते थे, *''कज़ालिकल्लाह''* या फिर *''कज़ालिकल्लाहु रब्बी''*। चौथी हदीस फ़सील बिन यसार का बयान है कि मुझे इमाम मो0 बाक़र (अ0) ने हुक्म दिया कि मैं *'कुल्हुवल्लाह'* पढ़ूँ और सूरह के ख़त्म होने पर तीन मर्तबा कहूँ–

''कज़ालिकल्लाहु रब्बी ''

इन हदीसों में नमाज़ और नमाज़ के अलावा पढ़ने का अलग से कोई बयान नहीं है, इसलिए नमाज़ की हालत में भी इस बोल का कहना सही है। कम से कम एक मर्तबा उससे अच्छा है दो मर्तबा और सबसे अच्छा तीन मर्तबा है। दूसरे और सूरों के बाद जो लफ़्जें और जुम्ले कहना चाहिए वह नीचे दिये जा रहे हैं।

l jwg o'' kEl *

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की हदीस है कि जब सूरह वश्शम्स' को ख़त्म करें तो , कहे– *''स–द–क़ल्लाहु व रसूलुह''*, चूँकि इस सूरह के आख़िरी जुम्ले ये हैं।–*''क़ा–ल लहुम रसूलुल्लाहि ना–क़तल्लाहि ....''*

इसलिए बन्दा *'' सदक़ल्लाहु व रसूलुहु''* कह कर ख़ुदा के वादे (जो इस आयत में बयान हो रहा है) और उसके पैग़म्बर (स0) के कहने की सच्चाई करता है।

l jwg ^jgeku**

इसके बारे में कई रवायतों में आया है कि हर मर्तबा *'' फ़बि अय्–यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान''* के बाद कहे *'' ला बशैइम् मिन आला–य–क रब्बि उकज़्ज़िब ''*

l jwg ^oRrhu**

इसके लिए हुक्म है कि जब सूरह ''वत्तीन'' पढ़ो, तो कहो *'' व नह्नु अ़ला ज़ालिका मिनश्–शाहिदीन''* इस सूरह में इन्सान पैदा होने के बयान के बाद उसके अन्त को बताया गया है कि वह *अस्–फ़लुस्साफ़िलीन* (सब से ख़राब से भी ख़राब, सबसे नीच) में जाएगा, लेकिन अगर ईमान और अच्छे अमल कर्म करे तो उसे कामयाबी मिलेगी। आख़िरी आयत में पूछा गया कि क्या अल्लाह बेहतरीन हाकिम नहीं है? तो यहाँ पर बन्दों की तरफ़ से कहा जाता है कि ''हम सब इसके गवाह है''।

l jwg ^dqy &; k, sgy ~dkfQ:u**

इमाम रिज़ा (अ0) से रवायत है कि जब आप *''कुल् या अय्युहल् काफ़िरून''* पढ़ते थे तो धीरे से कहते थे–*''या अय्युहल काफ़िरून''* ये ख़ुदा के उसी हुक्म पर चलना है और जब सूरह पूरा होता था तो तीन मर्तबा कहते थे, *''अल्लाहु रब्बी व दीनिल्इस्लामु''* (अल्लाह मेरा पालनहार है और मेरा धर्म इस्लाम है)।

l jwg ^gEn**

इसी तरह जब सूरह हम्द को पढ़ चुके तो फिर कहे *''अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आ़–लमीन''*।

l jwg ^vkyk**

और जब सूरह ''आला'' पढ़े तो *''सब्बिहिस्–म–रब्–बिकल आ़ला''* के बाद धीरे से कहे *'' सुब्हान रब्–बीयल आला''*।

इसके अलावा जब क़ुर्आन की ये आयत *''अल्लाहु ख़ैरूम मा युश–रिकून''* पढ़े तो कहे–. *''अल्लाहु अल्लाहु ख़ैरून अल्लाहु अक्बर ''* और जब पढ़े *''सुम्मल्–लज़ी–न क–फ़रूबिरब्बिहिम यादिलून''* तो कहे *'' क–ज़–बल आदिलू–न बिल्लह''* और जब पढ़े *''अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्ति ख़िज़ु व–ल–दन–व लम यकुल् लहू शरीकुन फ़िल मुल्कि व लम् यकुल् लहूवलीयम मिनज़्ज़ुल्लि व कबी–रतुन*

तकबीरा'' तो कहे *''अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर''* और जब पढ़े *''इन्नल्ला–ह व मलाइ क–तु–हू यु–सल्लू–न अ–लन्नबी''* तो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद भेजे और जब पढ़े आ–मन्–ना बिल्लाहि तो कहे आ–मन्–ना बिल्लाहि और जब तब्बत य–द अबी ल–हबियूँ पढ़े तो अबू लहब के लिये बद दुआ़ करे और जब सूरह 'क़ियामत' पढ़े तो आख़िर में कहे सुबहा–न–कल्लाहुम्–मा व बला और जब पढ़े या अइयुहल्–लज़ीन आ–मनू तो चुपके से कहे लब्बै–क अल्लाहुम्–म लब्बै–क और जब पढ़े अलै–स–ज़ालिक बिक़ादिरिन अला अन युह इल मौ–त तो कहे सुबहा–न–क ल्लाहुमम् व बला।

ये सब इसीलिए है कि इन्सान कुर्आन की आयतों और उसके मानी पर ध्यान दे ताकि उसका असर अपने दिल में लेता रहे।

dqw

कुनूत के मानी 'दुआ़' के हैं और दुआ़ के लिए नमाज़ में आ़म इजाज़त दी गयी है। हर जगह दुआ़ की जा सकती है, क्यों कि खुदा की बारगाह में दुआ़ खुद एक इबादत है, बल्कि हदीस में आया है कि *''अद्दुआ़उ मुख़ल्–इबादह* ''यानि ''दुआ़ इबादत का 'सत्ता (गूदा) है जिस तरह फल में गूदे की हैसियत होती है''।

अगर आप ग़ौर करें तो खुदा के स्वतन्त्र राजदरबार में अपनी नियाज़मन्दी (पराधीनता ज़रूरत) को ज़ाहिर करने को ही इबादत भक्ति कहते हैं और दुआ़ उस नियाज़मन्दी (हाजत) और ज़रूरत का एक Practical सबूत है।

इस्लाम ने माद्दियत (Materialism) में रूहानियत (Sprituality) को समोने का एक बड़ा मक़सद जो अपने सामने रखा था, 'दुआ़' उसका एक कामयाब ज़रिया है क्यों कि इस तरह इन्सान अपने पूरे पूरे माद्दी मक़सद यानि सिर्फ़ दुनिया की चीज़ों को मांगने में भी खुदा को याद करने पर मजबूर होता है।

मज़े की बात ये है कि बस अपना मतलब अपनी मांग चाहे वह आदमी की जानवरों जैसी चाहतों के पूरा करने ही का हो, लेकिन शर्त ये है कि वह गुनाह न हो, अगर बन्दा उसे 'सवाल' मांग की तरह अपने मालिक की बारगाह में पेश कर दे तो ये उसका पेश (प्रस्तुत) करना एक बेहतरीन इबादत और रूहानी आज्ञा पालन होगा। यूं तो नमाज़ में हर जगह इसकी (दुआ़ की) इजाज़त है मगर एक जगह ख़ास तौर से इसके लिए रखी गयी है, और वह दूसरी रकअत में दूसरा सूरह पढ़ने के बाद रुकू से पहले की जगह है। यहाँ पर जो दुआ़ की जाती है इसी को धर्म की ज़बान में 'कुनूत' कहते है। इसे कुछ उलमा तो वाजिब (अनिवार्य/ज़रूरी) समझते हैं, मगर हदीसों से मालूम होता है कि ये वह सुन्नत (वान्छनीव) है जिसे जहाँ तक हो सके ज़रूर करना चाहिए। कुछ रवायतों में इसके लिए ये कहा गया है– *'' सुन्–न–तुव वाजिबतुन''* यानि ''वह एक सुन्नत है जो वाजिब व ज़रूरी है''।

कुनूत के लिए शरीयत (शास्त्र) के लिहाज़ से कोई शब्द नहीं रखे गये हैं, मगर कम से कम ये कुनूत हदीस में आया है– *''अल्ला हुम्मग् फ़िर् लना वर हम्ना व आ़फ़िना वा'फु अ़न्ना फ़िददुनया वल आख़िरह इन्–न–क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर''*

ये कुनूत इस्लाम के उस मक़सद को ज़ाहिर करता है, जिसे उसने मिसाल के तौर पर अपने मानने वालों के लिए पेश किया है कि वह न दीन को भुलाएं और न 'दुनिया' को बल्कि 'दीन व दुनिया' दोनों की कामयाबी चाहते हैं, यह 'दुआ़' इसी ख़ास बात को अपने अन्दर लिए हुए है।

पहले तो आदमी अपने पहले की कमियों को याद करके उनकी माफ़ी चाहता है, ''ऐ खुदा! हमको मुआफ़ कर दे और हम पर रहम कर'' इसके बाद अपने आगे की भलाई चाहता है और कहता है *''वआफ़िना व'फु–अन्ना''*, और हमको सलामती (ठीक रखना) और हमको मआफ़ कर दे।'' *''फ़िद्दुन्या वल्–आखिरह''*, यह पहले दोनों जुम्लों से ताआल्लुक़ रखता है। दो चीज़ें *''वा–आ़फ़िना व'फु–अन्ना''* ''हमको सलामती दे और हमको माफ़ कर दे'' इसके बारे में क्रम से दोनों लोक ज़ाहिर किये गए हैं।, *'' फ़िद्दुन्या वल्–आख़िरह''*, दुनिया और आख़ेरत (परलोक) में, यानी दुनिया में सलामती और आख़ेरत में माफ़ी। अब यह ख़्याल नहीं करना चाहिए कि इबादत करने वाले भक्तिों और परहेज़गारों साधुओं को ''दुनिया'' की सलामती से क्या लेना देना?

यह बिल्कुल सही नहीं है क्यों कि ज़िन्दगी,

सेहत और सलामती सब ख़ुदा की नेमतें हैं जो अगर सही तरह इस्तेमाल हों तो यही ख़ुदा की ख़ुशी (अच्छा) और आख़ेरत की कामयाबी (मुक्ति) की वजह भी बन सकती हैं। यह बिल्कुल मामूली सोच होगी कि अगर आदमी यह ख़्याल करें कि इस दुनिया में हम तकलीफें झेलें तो अच्छा है या यह सोचे कि छुटपने में मौत आ जाए और दुनिया से चला जाए तो अच्छा है, अगर यही अच्छा होता तो ख़ुदकुशी/आत्म हत्या और वह चीज़ें जो सेहत को नुक़सान पहुँचाती हैं उनका करना शरीयत की तरफ़ से जुर्म न होता। इन चीज़ों के बारे में बन्धन लागू करने ही से ज़ाहिर होता है कि हमारी ज़िन्दगी , हमारा बाक़ी रहना और हमारी सलामती उसे मनज़ूर है। इसी लिए ज़िन्दगी और सेहत पर ख़ुदा का शुक्र करने (धन्यवाद) का मौक़ा है। बेशक उपरी नज़र से देखने पर ख़ुदा के पहचानने वाले बन्दों की यही शान मालूम होती है कि वह दुनिया के चैन आराम और सलामती को कुछ न समझे लेकिन ख़ुदा की नेमत की क़द्र और भारीपन के समझने वाले इन चीज़ों को भी अपनी जगह अहम समझते हैं। एक मरतबा हज़रत इमामे हसन (अ0) से तज़केरा हुआ कि अबूज़र ग़िफ़ारी कहते हैं कि मैं बीमारी को सेहत से, तकलीफ़ को राहत से और ग़रीबी दरिद्रता को धन दौलत और मालदारी से ज़्यादा चाहता हूँ। इमाम ने फ़रमाया कि जो भी ख़ुदा के चुने पर भरोसा करे उसे यह आरज़ू नहीं करना चाहिए कि जिस हाल में ख़ुदा ने रखा है उसके सिवा किसी और हाल की तरफ़ वह चला जाए। मतलब यह है कि हमें यह कहने का क्या हक़ कि बीमारी अच्छी या सेहत (स्वास्थ्य/Health), तकलीफ़ अच्छी या चैन, ग़रीबी अच्छी या धनी होना, बस जिस हाल में ख़ुदा रखे वही सबसे अच्छा है। इस लेहाज़ से ख़ुदा से दुनिया के लिए भी दुआ़ मांगना चाहिए और आख़ेरत के लिए भी, और क़ुनूत की दुआ़ जो आप नमाज़ में पढ़ते हैं उसमें यह दोनों मतलब शामिल है।''

''इन्–न–क अ़ला कुल–लि शैयिन क़दीर''

''तू हर बात पर क़ादिर सर्वशक्तिमान है यानी तू हर चीज़ पर बस रखता है, चाहे दुनिया का मतलब हो और चाहे आख़ेरत के, सब तेरे ही क़ब्ज़े Control में हैं।

: dwo l tns

सुरे पढ़ने के बाद और दूसरी रकत में क़ुनूत के बाद इन्सान ख़ुदा की बड़ाई के एहसास को ज़्यादा ज़ाहिर करते हुए झुक जाता है, और कहता है, ''*सुब्हा–न रब्बियल् अ़ज़ीमि व बिहम्दिही*''

''हर त्रुटि कमी से पाक है परे है, मेरा पालनहार जो बड़ा महानता वाला है और हम्द (संस्तुति/सराहना) वाला है।'' रूकू के बाद सर उठता है और यह विचार होता है कि मेरे हम्द सराहना और तसबीह (ख़ुदा के पाक होने का एलान) का कोई सुनने वाला भी है, तो फ़ौरन ख़ुदा के 'समीअ़' (यानी ख़ुदा हर चीज़ का सुनने वाला है) होने का यक़ीन निश्चय सामने आ जाता है और कहता है *''समिअ़ल्लाहु लिमन्–हमिदह''* *''अल्लाह''* उसकी आवाज़ (पुकार) सुनता है जो उसकी हम्द करे''। ये उस ध्यान को जगाना है कि जिसे नमाज़ में आने के वक़्त इमाम (अ0) ने इन लफ़्ज़ों के ज़रिए पैदा करना चाहा था कि, तुम यक़ीन निश्चय जानो कि ख़ुदा के सामने हो, तुम उसे नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है। देखने की बात काम से जुड़ी होती हैं। यहाँ उसी एहसास को पैदा किया गया है कि जो कुछ तुम कहते हो उसको ख़ुदा सुन रहा है। यह कहते–कहते ख़ुदा की बड़ाई और ऊँचाई का इतना असर पड़ता है कि बन्दा मुँह के बल ज़मीन पर सजदे के लिए गिर पड़ता है। याद रखिए कि रुकू के बाद ही सीधे सजदे का हुक्म होता तो उसकी महानता के सम्मान की शान उतनी ही ज़ाहिर होती जितनी उस खड़े होने की हालत से सजदे में जाने में होती है। बन्दा जितना झुकता है उतना ज़्यादा वह ख़ुदा की बड़ाई और ऊँचाई को ज़ाहिर करता है। रूकू का दरजा आधे शरीर तक झुकने का था और सजदा उसकी आख़िरी हद है इसलिए हम्द सराहना के शब्दों में फ़र्क़ था वहाँ (रूकू में) ''*सुबहा–न रब्बि–यल् अ़ज़ीमे वबिहम्दिह* था यानी उसको 'अज़ीम' (महानता वाला) कहा गया है, जिससे 'अ़ज़मत' महानता ज़ाहिर होती है और यहाँ (सजदे में) ''*सुब्हा–न रब्बियल आ़ला वबिहम्दिह*'' है यानी उसको आला (सबसे ऊँचा/सर्वोच्च) कहा जा रहा है जिसमें ऊँचाई के गुण (ख़ासियत) को बढ़ती (Superlative Degree) के साथ कहा गया है। ''*अल्–आ़ला*'' यानी ''उच्चतम और सबसे ऊँपर'' सजदे से सर उठाया तो ख़ुदा की

¼ckdh is u0 14 ij---------------½

रसूल स0 की बेटी

y§kd %ekSykuk jtk hmnnhu gSj lkgc] by kgkckn   fd Lr %01

^^vjc nškeat ukc Qkrekdhi Sb'kl sigyš

पुत्रियों! बचपन में तुम्हारे माता–पिता ने अवश्य ही बताया होगा कि तौहीद और रेसालत किसे कहते हैं?

तौहीद इस्लाम मज़हब का पहला सिद्धान्त है इसका अर्थ यह है कि सारे संसार का जन्म दाता और पालन पोषण करने वाला एक है जिसे हम अल्लाह कहते हैं।

दूसरे नुबूवत यानी उसी अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए एक लाख चौबीस हज़ार नबी (दूत) भेजे जिन्होंने संसार में आकर अच्छे कामों को करने का आदेश दिया और बुरे काम करने को मना किया।

सबसे प्रथम नबी हज़रत आदम अ0 थे जो सबसे पहले व्यक्ति थे, और सबसे अन्तिम नबी हमारे रसूल जनाब मोहम्मद मुस्तुफा स0 हैं। हज़रत ने इस धरती पर आकर इस्लाम धर्म की शिक्षाएं दीं जो हज़रत आदम अ0 के समय से ही मनुष्य के लिए भेजा गया था।

उन्होंने धर्म की सभी अच्छी अच्छी बातों को लोगों तक पँहुचाया, समझाया और खुद उनपर चले।

जिस समय हमारे रसूल अरब देश में पैदा हुए अनेक प्रकार की बुराइयां फैली थीं, लोग बिल्कुल जंगली, असभ्य और अशिक्षित थे, उन को सोचने समझने की बुद्धि ही न थी यहां तक कि वह अपने पैदा करने वाले प्रभु (खुदा) को भी नहीं जानते थे। वह हर समय छोटी छोटी बातों को लेकर आपस में लड़ते और एक दूसरे के जान के प्यासे बने रहते थे। उन लोगों में सबसे बड़ी ख़राबी यह थी कि वे अपनी लड़की को जीवित जमीन में गाड़ देते या पहाड़ पर से नीचे फेक देते थे। वे ऐसा इसलिए करते थे कि वे समझते थे कि लड़कियाँ उनकी बेइज़्ज़ती का कारण हैं। हज़रत मोहम्मद ने जहां अनेक प्रकार की बुराइयां दूर की वहां इस बूरी रस्म को भी मिटाने की अत्यधिक चेष्टा की।

हमारे रसूल के केवल एक पुत्री पैदा हुई। उनका नाम हज़रत फातेमा है। रसूल को अपनी पुत्री से उनके अनेक गुणों के कारण बेहद प्रेम था। वे कहा करते थे कि फातेमा मेरा ही एक टुकड़ा है। इस वाक्य से साफ स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार रसूल अल्लाह हमारे आदर और सम्मान के योग्य हैं उसी तरह उनका टुकड़ा यानी फातिमा भी आदर और सम्मान के योग्य हैं इस वाक्य से एक अर्थ और भी निकलता है कि हज़रत मोहम्मद स0 अरब देश के उस अज्ञान और अत्याचार को भी मिटाना चाहते रहे हों जो महिला जाति के अनादर और दुःखों के कारण थे। वे हृदय से चाहते थे कि पुत्रियों के जीवित मारे जाने की बुरी रस्म समाप्त हो जाए। बीबी फ़ातेमा बहुत नेक और पवित्र महिला थीं। हम इस पुस्तक में उनके पवित्र जीवन चरित्र के विषय में संक्षेप में लिखेंगे जो सब मुसलमान औरतों बल्कि संसार की सभी महिलाओं के लिए नमूना बन सकीं हैं।

लड़कियो ! अच्छी तरह समझ लो, संसार में वही नेक और अच्छी औरत बन सकती है जो हज़रत फ़ातेमा के क़दम ब क़दम चलने की कोशिश करे और उनके चरित्र को अपनाए।

स्वयं तुम्हें चाहिए कि इस पुस्तक को पढ़ो और अपनी सहेलियों एंव अपने ख़ानदान की दूसरी औरतों को पढ़कर सुनाओ जिससे कि यह बातें सबके कानों तक पंहुच जाए।

^^chch Qkrekdk tUe

हज़रत मोहम्मद स0 ने 25 साल की आयु में मक्के की एक शरीफ और धनवान बीवी हज़रत खदीजा से शादी की। निकाह के बीस साल और ''बेसत'' के पांच साल बाद 20 जमादिउस्सानी को पैग़म्बर साहब की 45 साल की आयु में हज़रत फातेमा पैदा हुई। मगर जब हज़रत फातेमा पांच वर्ष की हुई तो आपकी

माता का देहान्त हो गया और उन्हें इस कम आयु में मां के मरने का दुःख भोगना पड़ा। मां के मरने का दुःख बच्चों के लिए बड़ा कठिन होता है परन्तु बीबी फातेमा के सिर पर प्रिय पिता का साया मौजूद था। सन्तान को अत्याधिक चाहने वाले पिता की गोद में पालन पोषण हुआ। हज़रत मोहम्मद उनकी देखभाल करते किसी समय उनको दुःखित नहीं होने देते थे। धर्म के कामों से जो समय बचता था वे उसे बीबी फ़ातेमा की देख भाल और तरबियत में लगाते थे। ख़ानदान में बहुत सी औरतें थीं मगर हज़रत ने अपनी बेटी की देखरेख अपने ही ज़िम्मे रखी थी, यहां तक कि उनके सिर में कंघी भी करते थे।

संक्षेप में हज़रत वे सारे काम भी करते थे जो मां ही के करने के हुआ करते हैं। बेटी भी अपने पिता से बेहद प्रेम करती और बचपन ही से बाप की सेवा करना अपना धर्म समझती थी।

एक बार ऐसा हुआ कि रसूल धार्मिक शिक्षा और उपदेश के लिए जा रहे थे कि रास्ते में एक नास्तिक ने आपके सिर पर धूल डाल दी। आप उसी हालत में घर वापस आए और जब बेटी ने बाप की यह दशा देखी तो बेचैन होकर रोने लगीं, पानी लाईं और सिर धुलाना शुरू किया। हज़रत ने जब प्यारी बेटी को रोते देखा तो कहा कि जाने पिदर (बाप की जान) दुखी न हो। खुदा तेरे बाप की रक्षा करेगा और शत्रुओं के अत्याचार से बचाएगा।

उस समय हज़रत फातेमा की आयु केवल 6 वर्ष की थी। परन्तु उस छोटी अवस्था में भी बाप की सेवा का उन्हें इतना ध्यान था।

प्यारी बच्चियों मां बाप की सेवा करना तुम्हारा कर्तव्य होना चाहिए।

foolkg d sgkyk r

जब मक्के में नास्तिकों ने रसूल को बहुत सताया और धर्म के कामों में बाधा पड़ने लगी तो खुदा की आज्ञा से मक्के को छोड़कर मदीना की ओर चले गए जहां कि लोगों ने आपका हार्दिक स्वागत किया और हज़रत वहां सुख चैन से रहने लगे। यहां आने के दूसरे ही वर्ष हज़रत को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। उसी काल में नास्तिकों और शत्रुओं ने मक्के से आकर युद्ध किया मगर आप विजयी रहे। इसके बाद इस्लाम धर्म फैलने लगा। हज़रत मोहम्मद के चचेरे भइयों में एक भाई हज़रत अली भी थे जो हज़रत अबूतालिब के पुत्र थे जिनसे हज़रत बहुत प्रेम करते थे क्योंकि बचपन ही से उनको लेकर हज़रत मोहम्मद ने पाला था। हज़रत अली भी अपने भाई से बहुत प्रेम करते थे और हर कठिनाई में उनकी सहायता करते थे और सदा उनके पसीने की जगह अपना लहु बहाने के लिए तैयार रहते थे।

उन्होंने हर एक युद्ध में दुश्मनों का सामना किया और उन्हें पराजित किया। इतिहास से ज्ञात होता है कि जितनी लड़ाइयां नास्तिकों से हुई थीं वे सभी हज़रत अली के हाथों विजित हुई।

जनाब फातेमा विवाह योग्य हुईं तो अरब देश के बड़े मालदार लोगों ने शादी करने का अनुरोध किया परन्तु हज़रत ने किसी को उत्तर न दिया।

एक दिन हज़रत के कुछ संगी साथी बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। हम सब ने हज़रत फातेमा से विवाह के लिए अनुरोध किया मगर हज़रत इस बारे में मौन रहे। केवल हज़रत अली ने अब तक इसके लिए कुछ नहीं कहा। हम तो यह समझते हैं कि हज़रत ने अली ही को फ़ातेमा के लिए चुन रखा है। यह कह कर सब लोग हज़रत अली के पास आये जो उस समय एक आदमी के बाग़ में मज़दूरी पर पानी भर रहे थे। हज़रत अली ने उन लोगों को देखकर कहा कि आप लोग कैसे आए हैं ? उन लोगों ने उत्तर दिया कि या अली कौन सी ऐसी खुबी है जो आप मे नही है फिर भी आपने अब तक विवाह करने के लिए हज़रत मोहम्मद से अनुरोध नहीं किया ? हमें पूरा विश्वास है कि हज़रत मोहम्मद जो आपसे बहुत प्रेम करते हैं, आपके निवेदन को स्वीकर अवश्य कर लेंगे। उन सबके कहने पर हज़रत अली उठे और हज़रत के पास आए और अस्सलाम अलैकुम या रसूल अल्लाह! कहकर सिर झुकाकर बैठ गए। किन्तु मुह से कुछ न कह सके।

हज़रत ने पूछा—ऐ अली! ऐसा मालूम होता है कि तुम किसी ज़रूरी काम से आए हो। मुझसे बयान करो। आज्ञा मिलते ही आपने निवेदन किया कि आप ही ने मुझे बचपन से अपने साथ रखा और माता पिता से ज़्यादा प्रिय माना। अब निवेदन है कि दामादी का सम्मान भी मुझे दें। यह सुनते ही हज़रत का चेहरा

प्रसन्नता से खिल उठा और तब हज़रत ने मुस्करा कर कहा या अली तुम्हारे पास कुछ है जो महरे फातेमा में अदा करो ताकि मैं तुम्हारा निकाह फातेमा के साथ कर दूँ।

हज़रत अली ने कहा–आप खूब जानते हैं कि दुनिया के माल से मेरे पास क्या है? केवल एक तलवार, एक ऊँट और एक जेरह है। इन तीन चीज़ों के अलावा कुछ नहीं।

हज़रत ने कहा–तलवार से तुम खुदा की राह में जेहाद (युद्ध) करते हो, ऊँट भी ज़रूरी है उसपर अपना सामान लादते हो और पानी भर कर अपनी रोज़ी कमाते हो। तुम ऐसे बहादुर के लिए जिरह की ज़रूरत नहीं। जाओ और उसे बेच डालो और उसकी कीमत लेकर मेरे पास आओ।

हज़रत अली यह आज्ञा पाते ही बाज़ार की ओर गए और ज़िरह को 480 दरहम में बेच कर हज़रत के पास आए और वह रकम फातेमा के महर में अदा कर दी।

हज़रत ने बेलाल को बुलाया जो आपके मोअज्जिन (अज़ान देने वाले) थे और उन्हें वह देरहम देकर फरमाया, जाओ बाज़ार से इत्र, कपड़े और रोजाना की ज़रूरत का घरेलू सामान खरीद लाओ। इस मामूली इन्तेज़ाम के साथ हज़रत ने अली और फ़ातेमा का निकाह पढ़ दिया।

लड़कियो ! तुम कभी यह न समझना कि हज़रत मोहम्मद ने अपनी प्यारी बेटी को बहुतदहेज देकर बिदा किया होगा। हम नीचे बीबी फातेमा के दहेज की वे चीजें लिखते हैं जो उनकी मेहर को पैसे से ही मंगवाई गई थीं :

एक कुर्ता, एक मक़ना (मुंह ढापने का रूमाल), एक काले रंग की चादर, दो तोशकें जिनमें खजूर के पत्ते और दुम्बे के बाल भरे हुए थे। चार चमड़े के तकिये जिनमें एक खुशबूदार घास भरी थी। एक ऊनी पर्दा, एक बैठने के लिए चटाई, एक तांबे का कटोरा, लकड़ी का एक कासा (प्याला), दूध रखने के लिए, चमड़े का एक बर्तन, पानी पीने के लिए एक घड़ा, चन्द मिट्टी के प्याले, एक लोटा, एक मश्क पानी भरने के लिए, और एक चक्की आटा पीसने के लिए।

बस यह कुल सामान था जो हजरत ने अपनी प्यारी बेटी को देकर विदा किया और दुआ की कि बारे इलाहा ! तू उन लागों को बरकत दे जिनके पास ज्यादातर मिट्टी के बर्तन हों और यह भी कहा सबसे अच्छी औरत वह है जिसका दहेज सबसे कम हो। लड़कियो ! एक बात और समझ लो बीबी फातेमा अरब की सबसे ज़्यादा मालदार मां की बेटी थी लेकिन जब नेक दिल बीबी जनाब खदीजा ने अपना सारा धन रसूल को दे डाला तो हज़रत ने उस धन को इस्लाम के फैलाने और खुदा की राह में दे दिया था।

इससे यह शिक्षा प्राप्त होती है कि दहेज की बेकार चीज़ों के बदले धन को नेक कामों में खर्च करना मनुष्य का कर्तव्य हैं।

आं हज़रत ने विदाई के समय कहा कि फ़ातेमा अधिक नेक और धार्मिक पत्नी है उसे संसार और उसके मनोरंजन से कोई सम्बन्ध नहीं इनसे किसी बात में इख्तेलाफ न करना और कभी किसी चीज की मांग न करना और हज़रत अली से कहा, ऐ अली फातेमा बहुत नेक पत्नी हैं इनके साथ हमेशा सरलता और दया का व्यवहार करना।

फिर दुआ की कि खुदा तुम दोनों की सन्तान को पवित्र और नेक रखे। मैं उसका दोस्त हूँ जो तुम्हारा मित्र है और उसका शत्रु हूँ जो तुम्हारा शत्रु है। मैं तुम दोनों को खुदा के हवाले करता हूँ।

रसूल की बेटी की विदाई में ऐसी शोभा हुई कि रिश्तेदार और दोस्त बरात के साथ थे। अपने लोगों के हाथों में तलवारें थीं और वे लोग तकबीर यानी "अल्लाहो अकबर" कहते जाते थे इसी लिए सुन्नत है कि बिदाई के समय तकबीर कही जाए।

लड़कियो ! तुम्हारे घरों में जब किसी का विवाह हो और कन्या बिदा होकर आती है तो ससुराल वाले प्रसन्न होते हैं और घर में हंसी खुशी की बातें होती हैं लेकिन खुशी की धुन में ऐसी बातें भी की जाती हैं जो धर्म और अख़लाक (शिष्टाचार) की नज़र में खटकती हैं। मगर जब तुम यह सुनोगी तो तुम्हें विशेष आश्चर्य होगा कि बीबी फातेमा जब विदा होकर अपने पति के घर आई तो यहां कोई उत्सव न हुआ और न किसी मनोरंजन का आयोजन किया गया। बल्कि इन दोनों खुदा के बन्दों ने विदाई के बाद तीन दिनों तक बराबर खुदा को धन्यवाद दिया और व्रत रखा और तीन रात नमाज़ पढते रहे। हमारे यहां जब शादियाँ होती हैं तो बराबर देखने में यही

आता है कि हफ़्तों पहले से नमाज़ छोड़ दी जाती है और शादी के बाद तो नमाज़ का ध्यान कठिनाई से आता है।

प्यारी लड़कियो ! तुम्हें अपनी बीबी फातेमा के जीवन चरित्र से शिक्षा लेनी चाहिए। यदि तुम उनके रास्ते पर चलोगी तो खुदा और रसूल खुश होंगे और तुम्हारे मन को भी प्रसन्नता मिलेगी कि तुमने एक अच्छा कार्य किया।

तुम्हें यह भी अनुभव हुआ होगा कि विवाह के अवसर पर भिन्न–भिन्न प्रकार की रस्में की जाती हैं जो हमारे धार्मिक गुरूजनों के यहां दिखाई नहीं पड़ेंगी। अब तुम्हीं इन्साफ करो कि शादी विवाह के अवसर पर बेकार रस्मों का बरतना हमारे रसूल की प्यारी शिक्षा के विरूद्ध है कि नहीं।

बताओ ऐसी दशा में तुम्हारा क्या कर्तव्य होना चाहिए ?

जब हज़रत फातेमा बिदा होकर अपने शौहर के घर आईं तो वह सन हिजरी का दूसरा साल था और ग्यारह हिजरी में आपका देहान्त हुआ इस प्रकार करीब करीब आठ वर्ष और छः महीने तक आपने हज़रत अली के घर में जीवन बिताया इस थोड़ी सी मुद्दत (अन्तराल) में बहुत सी कठिनाइयों को नेहायत ख़ुशी, सन्तोष और सब्र से सहन किया। हज़रत अली के मरतबा और राहत और आराम का ख्याल रखा और एताअत और फरमाँबरदारी को अपना कर्तव्य समझाा और घर के सब काम काज, हंसी खुशी अंजाम दिये (पूरे किये) और अपने बच्चों की परवरिश नरमी, मोहब्बत और दिल जोई से की। बीबी फातेमा के इन्तेक़ाल के बाद किसी व्यक्ति ने हज़रत अली से पूछा कि हज़रत फातेमा का बर्ताव आपके साथ कैसा था ?

हज़रत अली यह सुनते ही रोने लगे और कहा कि वे स्वर्ग का एक खुशबूदार फूल थीं जिसके मुरझाने पर भी उसकी खुशबू से मेरा दिमाग़ अब तक महक रहा है।

तुम यह समझती होगी कि बीबी फातेमा ने ससुराल में आराम उठाया होगा और बहुत सुख से जीवन गुजारा होगा परन्तु ऐसा नही हुआ। इस घर की हालत भी बिल्कुल रसूल के घर की सी थी, घर का कुल काम सैयदा अपने हाथें से करती थी। चक्की पीसती, झाड़ू देती, रोटी पकाती, और बच्चों को नहलाती धुलाती थीं जब कभी कोई बच्चा रोता तो खुद ही बहलाती भी थीं घर का काम करते करते थक तो जाती थीं मगर रोजाना का कोई काम बाक़ी नहीं रहने पाता था।

इमाम हसन फरमाते हैं कि घर के अन्दर का सब काम मेरी मां करती थीं और बाहर का काम मेरे पिता करते थे। अम्मां काम की ज़्यादती से घबराती न थी और न किसी पड़ोस की औरत से सहायता लेती थीं, यहां तक कि अपने खानदान की औरतों को भी तकलीफ़ न देती थीं।

लड़कियो ! इससे केवल यही नतीजा नहीं निकलता कि बीबी फातेमा मेहनत पर सब्र करतीं थीं बल्कि इन बातों से खानादारी के फराएज़ (घर के ज़रूरी काम) , शौहर को आराम पँहुचने और बच्चों का पालन पोषण और देखभाल की अहमियत भी मालूम होती है।

चक्की पीसने और पानी भरने से जब दोनों हाथ जख़्मी हो गए तो एक रोज़ आपने हज़रत अली के कहने से हज़रत मोहम्मद से बिनती की कि बाबा!

मुझे एक कनीज़ दे दीजिए। आँ हज़रत ने फिज़्ज़ा को उनका हाथ बटाने के लिए साथ कर दिया। कनीज़ (लौन्डी) मिलने पर भी बीबी फातेमा ने घर का कुल काम उनपर नहीं छोड़ा बल्कि फिज़्ज़ा से कहा कि घर का सब काम एक रोज़ मैं करूंगी और एक रोज़ तुम करो लेकिन वाक़ेयात के देखने से ऐसा मालूम होता है कि अकसर खुद सब काम किया करती थीं।

एक बार ऐसा हुआ कि आपके दोनों बच्चे हसन और हुसैन बीमार हो गए। आपने खुदा से मन्नत मानी, अगर बच्चे स्वस्थ हो गए तो मैं तीन रोजे रखुंगी। यही नीयत हज़रत अली ने भी कर ली। खुदा ने अपने फज़्ल (दया) से बच्चों को अच्छा कर दिया तो उन्होंने अपनी अपनी मन्नत बढ़ाने के ख्याल से रोज़े की नीयत कर ली। उस दिन का वक़ेया है कि जनाबे सय्यदा ने जौ कूट पीसकर रोटियां तैयार की और जब रोजा खोलने का वक्त आया तो एक ग़रीब ने दरवाज़े पर सवाल किया ऐ एहलेबैते–रसूल मैं मिस्कीन (दीन) हूँ और भूखा हूँ। खुदा के लिए मुझे कुछ खाने के लिए दो। हज़रत अली ने अपने सामने की रोटी उठा कर मांगने वाले को दे दी। इसके बाद

तो फिर सबने अपने अपने हिस्से की रोटियां गरीब को दे दीं और सिर्फ पानी से रोज़ा खोल लिया और दूसरे रोज़े की नीयत कर ली। दूसरे दिन भी बीबी सय्यदा ने जौ कूट पीस कर आटा तैयार किया और उसकी पांच रोटियां तैयार की। जब रोज़ा अफ्तार करने का वक्त आया और सब एक जगह जमा हुए तो ठीक उसी वक्त किसी ने दरवाज़े पर पुकार कर कहा ऐ ऐहलेबैत ! मैं यतीम हूँ। मुझे खाना दो। आज भी सबने कल की तरह अपनी अपनी रोटियाँ देकर पानी से अफ्तार कर लिया और तीसरे दिन के लिए भी रोज़े की नीयत कर ली। तीसरे दिन फिर जनाबे सय्यदा ने उसी मेहनतो मशक्कत के बाद रोटियां पकाईं और जब सब घर वाले रोज़ा खोलने बैठे तो एक आदमी ने सवाल किया (मांगा) कि मैं एक कैदी हूँ और भूखा हूँ मुझे कुछ खाने को दो। आज तीसरे दिन भी सबने रोटियां उसके हवाले कर दी और सिर्फ पानी ही से रोज़ा खोला मगर भूख की वजह से सब पीले पड़ गये थे और कमज़ोरी के कारण उनके बदन कांप रहे थे। चौथे रोज़ जब रसूलुल्लाह घर में आए और उन लोगों की यह हालत देखी तो आंखों में आंसू भर लाये और खुदा से दुआ की। खुदा ने उन लोगों के लिए जन्नत से खाना भेजा।

लड़कियो ! देखो, इस एक वाकये से बहुत से नतीजे निकलते हैंः—

(1) तीनों दिन बीबी सय्यदा ने खुद ही जौ कूटा पीसा, छाना गूंधा और रोटियां पकाई।

(2) न भूख की शिकायत की और न रोज़े की हालत में काम करना छोड़ा।

(3) फिज़्ज़ा घर में मौजूद थी मगर खुद अपने ही हाथों सारे काम किये।

(4) हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ने भी जो बच्चे थे लगातार उसी हालत में रोजे रक्खे। यद्यपि अभी बुखार से उठे थे और कमज़ोर थे मगर मां ने मना नहीं किया।

(5) रोटियां देते वक्त भी मां ने हाथ नहीं रोका कि प्यारे बच्चों तुम बहुत कमज़ोर हो, अपनी अपनी रोटियां खा लो हम लोग तो रोटियां दे ही रहे हैं कोई और मां होती तो अवश्य बच्चों को रोक देती मगर सय्यदा ने खुदा की राह में खैरात करने से नहीं रोका।

अब तुम्हीं बताओ कि रमज़ान शरीफ के महीने में बिना किसी उचित कारण के रोज़े न रखना बीबी फातेमा के अमल (कर्म) और तालीम (शिक्षा) के खिलाफ़ है या नही ?

लड़कियो ! इस वाकये के सम्बन्ध में एक बात और सोचने योग्य है कि हम लोग जब खुदा न करे कभी संकट में पड़ते हैं तो तरह—तरह की मन्नतें मानते हैं। अक्सर कम समझ और जाहिल लोग गंडे टोने और झाड़ फूँक के लिए दौड़ते फिरते हैं मगर रसूल की चहेती बेटी और खुदा की खास दासी जनाबे फातेमा जब परेशान होती थीं तो केवल अपने पैदा करने वाले और पलने वाले ही की ओर झुकती थीं, उसी से विनती करती, दुआएं मांगती और उसी से करूणा की आशा करती। मन्नत भी मानती तो अल्लाह ही की इबादत की। खुदा की रहमत का शुकराना बीबी फात्मा नमाज और रोज़े कीसूरत में पेश करती थीं। खुदा तुम्हें भी ऐसी ही तौफीक दे! आमीन !!

egjcku cki dhul hgr ¼mins'k½ vk\$ cVhdk vey ¼kyu½

बीबी फात्मा ने कभी हज़रत अली से अच्छे, कीमती कपड़ों और गहनों की मांग नहीं की। इसीलिए विदाई के समय हज़रत मुहम्मद ने बेटी से कहा था कि फात्मा! अली से कभी किसी चीज़ की मांग न करना क्योंकि अली का हाथ माले दुनिया से खाली है।

लड़कियो ! तुम यह कभी न सोचना कि रसूलल्लाह गरीब थे या हज़रत अली फकीर थे या बीवी फातमा किसी निर्धन मां की बेटी थी। कदापि ऐसा नहीं है। देखो, रसूल के साथियों में तीन सौ सहाबी ऐसे थे जिनका खाना पीना रसूल अल्लाह के ज़िम्मे था। रसूल और उनका घराना अरब देश में मालदार समझा जाता था। यह लोग कबील—ए—कुरैश के सरदार थे मगर खल्के खुदा का इतना ख़याल था कि अपने माल से खुद फायदा उठाना कभी पसन्द नही करते थे बल्कि गरीबों, विधवाओं और अनाथों के पालन पोषण करने में खर्च करते थे। हज़रत अली ने तमाम उम्र जौ की रोटी खाकर बसर की जब कि गरीब न थे। एक बार आप ने अपना एक बाग बारह हज़ार दिरहम पर नीलाम किया। चार हज़ार दिरहम उस व्यक्ति को दे दिये जिसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए आपने बाग नीलाम किया था। मदीने के गरीबों को जब मालूम हुआ कि आज हज़रत अली ने

बाग नीलाम किया है। तो सबने आकर घेर लिया। हज़रत अली ने वह आठ हज़ार दिरहम भी उनमें बांट दिये और जब घर आए तो एक दिरहम भी पास न था।

हज़रत फातमा की मां जनाबे खदीजा भी मक्के में सबसे मालदार औरत थीं। उनका बहुत बड़ा व्यापार चलता था। जब उनके ख़ज़ाने की अशर्फियाँ निकाल कर ढ़ेर की जाती थीं तो एक टीला सा बन जाता था और इधर के लोग उधर दिखाई नहीं देते थे मगर उन्होंने जब अपनी पसन्द से हज़रत मुहम्मद से शादी कर ली, तो रसूलल्लाह के हुक्म से अपना सारा माल खुदा की राह में और इस्लाम फैलाने में व्यय कर दिया।

ऐसे मां बाप की बेटी ने कभी अपनी गरीबी की शिकायत नहीं की बल्कि हर हाल में खुदा का शुक्र अदा किया। सय्यदा को दुनिया के आराम और आसाइश से नफरत थी। बचपन ही से न अच्छे अच्छे कपड़ों का शौक था, न गहनों का, हालांकि आमतौर से सभी लड़कियों को गहनों का बड़ा शौक होता है।

एक बार ऐसा हुआ कि हज़रत रसूले खुदा बीबी सैय्यदा की शादी के बाद उनके घर में तशरीफ लाए मगर कुछ देखकर फौरन ही वापस चले गये। जनाब फातमा ने ग़ौर करना शुरू किया कि आज कौन सी ऐसी बात है जो बाबा को भली नहीं लगी है। आप को तुरन्त पता चल गया कि आज उन्होंने प्रतिदिन के विरूद्ध सोने का एक गहना पहन रक्खा है। इसका ध्यान आते ही तुरन्त गहना उतार कर मस्जिद में भेज दिया और कहला भेजा कि बाबा आप इसकी कीमत मदीने के गरीब लोगों में बांट दीजिए। रसूलल्लाह बेटी की इस बात पर अतयन्त प्रसन्न हुए और दोबारा घर में आए तो बेटी को सीने से लगा कर दुआएं दी और फरमाया "बेटी! तुझे दुनिया की आराइश (साज सज्जा अलंकार) से क्या काम, तेरे लिए तो खुदा ने आखिरत का आराम मुहय्या (उपलब्ध) कर रखा है।"

लड़कियों ! तुम यह समझी होगी कि इसके लिखने से मेरा यह मतलब है कि तुम भी अच्छे कपड़े और बहुमूल्य गहने पहनना छोड़ दो, मगर ऐसा नहीं है। यह तो बीबी फातमा का असाधारण अमल था। अलबत्ता नफीस कपड़े और कीमतीं गहने पहन कर तुम्हें गुरूर न करना चाहिए बल्कि यह ध्यान रहे कि बीबी फात्मा किस किस तरह से गरीब, बेकस (बेसहारा), विधवा और यतीमों की सहायता किया करतीं थीं और हाँ यह भी ध्यान रहे कि गहने कपड़े से इज्ज़त नहीं होती बल्कि इल्म (ज्ञान) और अखलाक़ से इज़्ज़त होती है।

सच तो यह है कि औरत का जेवर उसकी नेकी, रहमदिली (तरस), अख्लाक, हुनर (शिल्प), सलीकामन्दी (शिष्ट) है और उसकी "इज़्ज़त" उसकी "इसमत" है।

chch Qkrek ds vk§ nwljs uke

बीबी फात्मा के बहुत से नाम और अल्काब (उपनाम) हैं। बिन्ते रसूल (रसूल की बेटी), बिज़अतुर्रसूल (रसूल का टुकड़ा), ज़हरा (कली, उजागर), ताहिरा (पवित्र), मासूमा (निष्पाप), सिद्दीका (सत्यवन्ती), मुहद्दिसा (बात बताने वाली), ज़कीया (पुण्यात्मा), राज़िया (खुदा की चाहने वाली, उससे खुश रहने वाली), मरज़ीया (खुदा की चहीती, जिससे खुदा खुश रहे), हौरा, बुतूल (कुमारी, जो मासिक–धर्म से पवित्र रहे), सय्यद–ए–निसाइल आलमीन सारे संसारों की महिलाओं की प्रमुख।

फ़ात्मा के मानी हैं बुराई से बिल्कुल दूर। बिन्ते रसूल इसलिए कहते हैं कि आप रसूल की बेटी हैं। बिज़अतुर्रसूल इसलिए कहते हैं कि खुद हज़रत रसूले खुदा ने फरमाया कि फ़ात्मा बिजअतुमिन्नी फ़ात्मा मेरा ही एक अंश है। बिज़आ के मानी हैं टुकड़ा, अंश। इससे मतलब यह है कि आप रसूल अ0 ही का एक अंश हैं। ज़हरा वह है जिससे रौशनी जाहिर हो। किताबों में है कि जब आप नमाज़ के लिए खड़ी होतीं थीं तो ज़मीन से आसमान तक नूर और रौशनी का स्तम्भ बन जाता था। हज़रत मुहम्मद बीबी फात्मा को उनके सौन्दर्य के कारण जहरा कह कर भी अक्सर पुकारते थे। ताहिरा आपको इस लिए कहते हैं कि खुदा ने आपकी तहारत (पवित्रता) की गवाही कुरआन में दी है। आयते ततहीर उनकी तहारत का एलान है। मासूमा इसलिए कि ज़िन्दगी में कभी छेटे से छोटे गुनाह का ख्याल तक नहीं किया। सिद्दीक़ा इस लिए कहते है। कि सारी उम्र में कभी सिवा सच के कुछ नहीं कहा। आप की सच्चाई की गवाही कुरआन ने दी है। जब नजरान के ईसाइयों से और रसूल अल्लाह से इस्लाम और ईसाइयत के बारे में बहस हुई और वह किसी प्रकार के तर्क से कायल न

हुए तो रसूल खुदा ने खुदा के हुक्म से कहा कि आओ हम अपने बच्चों को बुलाएं और तुम अपने बच्चों को, हम अपनी औरतो को बुलाए और तुम अपनी औरतों को, और हम अपने नफ्सों का बुलाएं और तुम अपने नफ्सों को, और हम झूठो पर अल्लाह की लानत भेजवाएं इस प्रकार के मुक़ाबले को 'मुबाहिला' कहते हैं। दूसरे दिन रसूलल्लाह हज़रत हसन, हुसैन, हज़रत फात्मा और हज़रत अली को अपने साथ लेकर मैदान में आ गये मगर जब उधर ईसाइयों ने उनके नूरानी चेहरे देखे तो मुबाहले से इन्कार कर दिया और इस प्रकार इन सब की सच्चाई का कलमा पढ़ लिया जिसमें बीबी फात्मा भी शामिल थीं। 'मुहद्दिसा' इसलिए कहते हैं कि फरिश्ते आपसे बातें करते थे। 'ज़कीया' इसलिए कि आपके कमालाते नफ्स में सदैव उन्नति होती थी। रज़िया इसलिए कि अल्लाह की रजामन्दी से आप राज़ी रहती थीं। 'मरज़िया' इसलिए कहा जाता था कि आप अल्लाह को बहुत पसन्द थीं। 'हौरा' यानी सदुगुणों और नैतिकता में हूरों के समान थी। 'बुतूल' अर्थात सदैव पवित्र और इबादत के काबिल रहने वाली थीं। 'सय्यद–ए–निसाइल आलिमीन' का लकब रसूल्लाह ने आपके इल्मो फज्ल (ज्ञान और उसमें बढ़ा होना) के कारण दिया था जिसके अथ्र होते हैं दुनिया की तमाम औरतों की सरदार।

आपकी कुन्नियत उम्मुल हसन (हसन की माँ), उम्मुल हुसैन (हुसैन की माँ), उम्मुल अइम्मा है अर्थात् इमामों की मां (इमाम हसन से लेकर बारहवें इमाम तक)। उम्मुल हसनैन कह कर हज़रत अली पुकारते थे यानी हसन और हुसैन की मां। हज़रत रसूले खुदा ने उन्हें एक खिताब और दिया था और अक्सर आप उन्हें उम्मे अबीहा कहते थे यानी अपने बाप की मां। इस से हज़रत का मतलब है कि फात्मा की जात से बेटी की मुहब्बत और मां की शफ्क़त दोनों मिलती है।

QkRek t ¢jk dk , [ykd +¼f' k"Vkpkj½

यह तो एक मामूली सी बात है कि बीबी सय्यदा^स0 ने कभी किसी सायल (मांगने वाले) को अपने दरवाज़े से खाली हाथ नहीं फेरा और जब किसी ने कोई सवाल किया तो आपने तुरन्त उसे पूरा कर दिया। उन्होंने सदैव दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से अधिक महत्व दिया। इसके अलावा और बहुत सी बातें हैं जिनसे उनके अख्लाक़ का पता चलता है। आप सदा नर्मी और मेहरबानी से बातें करती थीं और कभी गुस्सा न आता था। जो भी उनके घर आता चाहे वह काफिर ही क्यों न हो, उसका वह आदर सत्कार करती थीं।

एक बार की बात है कि अरब के किसी राजा की लड़कियां कैद होकर के रसूलुल्लाह के पास लाई गईं। हज़रत ने उन्हें जनाबे सय्यदा के पास भेज दिया राजा की बेटियां जब रसूल की बेटी के घर आईं तो यहां वह शानों शौकत कहां थी जिसकी वह आदी थीं। इनके घर में अच्छे अच्छे कालीन थे न साफ शफ्फाफ फर्श। घर में सिर्फ ऊँट की एक खाल थी जिस पर दिन को ऊँट खाना खाता और रात को वही हसनैन के लिए बिछौना हो जाता। बीबी फात्मा ने राजा की बेटियों के लिए अपनी चादर बिछा दी। इस व्यवहार का उनपर यह असर हुआ कि वह सब मुसलमान हो गईं।

लड़कियो ! हज़रत फात्मा की नेकी और अख्लाक के वाकयात से किताबें भरी पड़ीं हैं मगर हमने मिसाल के तौर पर उनके बे–मिसाल अख्लाक का यह एक वाकया पेश किया है जिससे तुम यह अन्दाज़ा कर सको कि धन दौलत और शान–शैकत से नहीं, बल्कि अख्लाको मुहब्बत और मुरौवत से दिल जीते जाते हैं।

bcknr s[kqk ¼bZoj HkfDr ½d k ' kkSd

इसके बारे में हम पहले भी कुछ लिख चुके हैं कि जनाबे सय्यदा को नमाज़, रोज़े और खुदा की इबादत से बहुत मुहब्बत थी। हसन बसरी कहते हैं कि हज़रत फात्मा इबादत में सबसे आगे थीं। नमाज़ में इतनी देर तक ख़ड़ी रहती थीं कि आप के पांव सूज जाते थे। हज़रत इमाम हसन फरमाते हैं कि मेरी मां जुमा की रात को रात भर नमाज़ें पढ़ती थीं यहां तक कि सवेरा हो जाता। उस वक्त पास–पड़ोस वालों के लिए दुआ करतीं मगर अपने वास्ते दुआ नहीं करती थीं। एक रोज़ मैंने पूछा, ''ऐ अम्माँ ! आप दूसरों के लिए जिस तरह दुआ करती हैं अपने लिए क्यों नहीं करतीं?'' जवाब दिया कि बेटे ''अज्जार सुमद्दार'' यानी अव्वल पड़ोसी का हक है बाद में घर वालों का।

इबादत में खौफे–खुदा (भगवान का डर) से यह हालत होती थी कि आप का सारा बदन

कांपने लगता था और चेहरे का रंग पीला पड़ जाता था। हर वक्त ज़िक्र खुदा (ईश्वर की याद, ध्यान) में गुजरता था। अगर बच्चे सो जाते थे तो आप पंखा झला करतीं और कुरआन भी पढ़ा करती अक्सर रोटी पकाते समय भी कुरआन पढ़ा करतीं। इसका मतलब यह है कि ज़िन्दगी का कोई वक्त यादे खुदा से खाली नहीं रहता था। हमारे यहां की औरतें ऐसे वक्त में अगर कोई पास हुआ तो इधर उधर की व्यर्थ बातें किया करती हैं और अगर अकेली हैं तो गुनगुनाया करती हैं।

लड़कियो! जनाबे फातमा[स०] की इतनी इबादत का मतलब यह है कि हमें पैदा करने और पालने वाले का शुक्रिया अदा करना चाहिए, हमारी इबादतें उसका शुक्रिया है। वरना हमारी नमाज़ों और इबादतों की अल्लाह को कोई आवश्यकता नहीं है।

fjtk, bylkgh ¼Hkxoku dh [kq'kh½

जनाबे सय्यदा ने अपने हुस्ने–अमल से अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल कर ली थी। जिसका सुबूत यह है कि सय्यदा की कोई बात कभी ख़ाली नहीं गई जिसके लिए उसकी बारगाह में दुआ की हो वह पूरी ज़रूर हुई।

रमज़ान का महीना खत्म हो रहा था और ईद की तैयारी की जा रही थी जो मुसलमानों के लिए बड़ा त्योहार समझा जाता है और जिसमें हर अमीरो गरीब नए कपड़े पहनता है। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन की, जिनकी उम्र अभी छोटी थी, जब मालूम हुआ कि कल ईद का दिन है तो दौड़े हुए अपनी मां के पास आए और अपने लिए अच्छे–अच्छे कपड़ों की फरमाइश (चाहत) की। इस अवसर पर मां का दिल ज़रूर बेक़रार हो गया होगा इसलिए कि घर में नए–नए लिबास कहां थे। बच्चों की फ़रमाइश सुनकर बीबी सय्यदा चुप हो गई मगर जब बच्चों ने इसरार किया तो आपने फ़रमाया, ''तुम्हारे कपड़े दर्जी के पास हैं।'' बच्चे मां की बात से मुतमइन होकर सो गये। रात गुजरती रही और ईद की सुबह आई। किसी ने दरवाज़े पर पुकार कर कहा, ''बच्चों का दर्ज़ी कपड़ लाया है।'' बच्चे खुश होकर बाहर गये और कपड़े लेकर वापस हुए। मां ने यह देखकर शुक्र का सज्दा किया और बच्चों को नहला–धुला कर, और नये कपड़े पहना कर मस्जिद में भेज दिया। चूंकि बीबी फात्मा की जबान से निकल गया था कि तुम्हारे कपड़े दर्जी के पास हैं खुदा ने उसको सच कर दिखाया और एक फ़रिश्ते को हुक्म दिया कि जन्नत से हसन और हुसैन के लिए कपड़े ले जाए और कहे कि दर्ज़ी कपड़े लाया है।

लड़कियो ! बीबी सय्यदा की यह फज़ीलत (उत्कृष्टता, श्रेष्ठता) और यह रूत्बा (कोटि) खुदा की खुशनूदी के कारण प्राप्त हुआ जिसके शुक्राने (धन्यवाद) में वह सदैव इबादते खुदा और इताअते रसूल (रसूल का आज्ञा पालन) में तल्लीन रहती थीं।

इस वाकए के अलावा बहुत से ऐसे दूसरे वाक़ेयात भी हैं जिनके द्वारा और भी उदाहरण पेश किये जा सकते हैं मगर इससे शिक्षा प्राप्त करने औरउस पर अमल (पालन) करने के लिए केवल यही एक वाकया काफ़ी है। खुदा करे तुम्हारे दिलों में भी इबादते–खुदा और इताइते–रसूल का जज़्बा (भावा) जागृत हो।

xjhch esa lUrks"k

बीबी फ़ात्मा ने हमेशा अपनी आवश्यकताओं पर दूसरों की आवश्यकताओं को महत्व दिया। अपना खाना भूखों को खिला देती थीं और भूखी रहा करती थी। हम एक वाक़ेया ऐसा लिखते हैं जिससे मालूम होगा कि बीबी फात्मा को गरीबी और निर्धनता, और भूख और प्यास की हालत में भी कितना इतमीनान रहता था। न चेहरे से परेशानी ज़ाहिर होती थी न ज़बान से अपनी हालत दूसरों को बताती थीं।

¼tkjh------------------------½

¼'ks"k i`0 6 dk cfd;k-----------------½

महिमा, के सामने अपने फ़र्ज़ (कर्त्तव्य में) कमी का एहसास हुआ। यूँ जुर्म को मानते हुए माफ़ी चाही, तो कहा ''*अस्तग़फ़िरूल्ला–ह रब्बी व–अतूब इलैह*'', माफ़ी चाहता हूँ अल्लाह से जो मेरा पालनहार है और उसके दरबार में तौबा (पछताव) करता हूँ । उन गुनाहों की माफ़ी की दरख़्वास्त करने के साथ फिर एक बार उसकी अज़मत व बुजुर्गी पर माथा ज़मीन पर रखने की ज़रूरत महसूस हुई और दूसरा सजदा किया और फिर पहले की तरह उसकी ऊँचाई ज़ाहिर की।

¼tkjh-----------------½

मुख्य समाचार

bl jkbZyhfoeku dkxt k+i j v kdze.k] gekl ds 4 deku.Mj dhekSr

गज़ा में इसराईल द्वारा किये गये आक्रमण में इसलामी तहरीक मजाहमत(हमास) के चार स्थानीय कमाण्डर शहीद हो गये। विस्फोटक पदार्थ के फटने से 5 इसराईली फौजी भी जख्मी हुये। फिलस्तीनी अधिकारियों ने इसराइली हमले में चार कमाण्डर रबीह बारीह, खालिद अबूबक्र, मोहम्मद अल्कैस और मोहम्मद दाऊद की मौत की पुष्टि की है। उग्रवादियों ने धमाका किया जिससे सुरंग से बम निरोधक वाले पांच इसराईली फौजी जख्मी हो गये।

दक्षिणी गज़ह के शहर खान यूनुस में अश्कोल बस्ती को निशाना बनाने के बाद जवाबी कार्यवाही में चार इसराईली फौजी जख्मी हुये जिनमें से एक की हालत नाजुक बतायी जा रही है। इसलाई अख्बार के अनुसार यह दर्दनाक हादसा गज़ा की सीमा के पास हुआ। अख्बार ने इस मामले में ज्यादा जानकारी नहीं दी। स्थानीय कौंसलर के सरबराह अलवन शोस्तर का कहना है कि जो कुछ भी हुआ है वह इसराईली बस्तियों से पस्पाई के कारण हुआ है उनका कहना था कि यह एक बहुत ही दुर्भाग्य का समय है।

इसराईली फौज का कहना है कि गज़ा की पट्टी से करीब इसराइली क्षेत्रों तक जमीन के नीचे सुरंगो तक पहुंचने को खत्म करने का कोई रेडिकल हल मौजूद नहीं है। इब्रानी भाषा वाले चैनल 10 ने एक बयान नकल किया है जिसमें कहा गया है कि सैहूनी फौजियों की ज़िन्दगी खतरे में है क्योंकि वह गज़ा की पट्टी से इसराईली क्षेत्रों में पहुंचने के लिए खोदी जाने वाली सुरंगो के मुंह को तलाश करने और उनमें विस्फोटक पदार्थ को बेकार करने के लिए फिलस्तीनी क्षेत्रों में जाते हैं जहां उन्हें हर समय स्वयं पर फिलस्तीनी सुरक्षाकर्मियों के हमले का डर बना रहता है। मीडिया ने फिलस्तीनी सुरक्षाकर्मियों और इसलाईली फौजियों के बीच खान यूनुस के क्षेत्र में होने वाली झड़पों का हवाला देते हुए कहा कि ग़ज़ा के समीप उन सुरंगो में होने वाला यह हादसा किसी हद तक खैरियत से अंजाम को पहुंचा। चैनल 10 के अनुसार खान यूनुस के क्षेत्र में होने वाली झड़पों में जख़्मी होने वाला इसलाईली फौजी अधिकारी खुफिया ठिकानों और सुरंगों को तबाह करने वाले विशेष यूनिट का सरबराह था।

ग़ज़ा की पट्टी में सैंकड़ों फिलस्तीनियों ने तुरन्त एलामिया के छियानवे साल पूरे होने पर धरना प्रदर्शन किया और इलाके में इसराईल की तौसी पसन्दाना पालीसियों की भर्त्सना की। मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार धरने में इस बात पर जोर दिया गया कि ऐलामिया फिलस्तीन के लिए बेपनाह मुश्किलात का कारण बना हुआ है। प्रदर्शनकारियों ने ग़ज़ा में अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के कार्यालय के सामने धरना भी दिया जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के कार्यालय और इंग्लैण्ड तथा फ्रान्स के दूतावासों में कार्य बन्द हो गया। इस धरने में फिलस्तीनी गिरोह ने तुरन्त ऐलामिया का विरोध करेते हुये उस दिन को फिलस्तीनी बाशिन्दों की तारीख का काला दिवस करार दिया।

यमन में मुतहारिब गिरोहों में झड़प, दस लोग हलाक

यमन में मताहारिब गिरोहों के दरमियान होने वाली झड़प में दस लोग मारे जा चुके हैं। फ्रांस न्यूज़ के अनुसार यमन के उत्तरी इलाके दमाज में सलफी ग्रुप और हौसियों के बीच झड़प हुयी है जिसमें अन्तिम खबरें आने तक दस लोग मारे जा चुके हैं, जबकि बीस से ज्यादा ज़ख्मी हुये हैं। याद रहे कि इस से पहले यह खबरें मिली थी कि यमन के सद्र की जानिब से गठित सालिसी कमेटी सलफियों और हौसी कबाइल के बीच मतभेद खत्म कराने में नाकाम हो गयी हैं। यमन के सद्र अली अब्दुल्लाह ने उपयुक्त दोनों गिरोहों के बीच समझौते के लिए यहया मन्सूर अबू अस्बह के नेतृत्व में यह कमेटी गठित की गयी थी। यमन के सूबा सोरा के क्षेत्र दमाज में 2011 से सलफियों ओर हौसियों के बीच झड़पें जारी हैं।

इराक में दो आत्मघती धमाके, आला फौजी अफ़सर समेत 21 फौजी हलाक

इराक में दो विभिन्न आत्मघती धमाकों में एक आला फौज अफसर समेत 21 लोग हलाक जबकि 46 जख्मी हो गये हैं। दोनों आत्मघाती बम धमाका क्रमशः मध्य और दक्षिणी इराक मे हुए हैं। पहला आत्मघाती धमाका बगदाद के उत्तर में 40 किलामीटर की दूरी पर तारमिया नामक कस्बे में इराकी हुकूमत के हामी फौजी रहनुमा जासिम सईद के घर बगदाद में हुआ। आत्मघाती हमलावर ने स्वंय को केमू फलाज करने के लिए फौजी यूनिफार्म पहन रखा था। सुत्रों के अनुसार इस आत्मघाती हमले में 14 लोग हलाक जबकि 40 जख्मी हो गये। यह आत्मधाती हमला उस समय हुआ जब शैख सईद जासिम की तरफ से रात्रिभोज समारोह चल रह था। रात्रिभोज में फौज और पुलिस के दूसरे अफसर भी मौजूद थे। आत्मघाती हमले की जद में आकर फौज के ब्रिगैडियर जनरल अब्दुस्सत्तार अपने एक और साथी अफसर और 6 पुलिस कर्मियों समेत हलाक हो गये। 6 हलाक होने वाले सुरक्षकर्मियों में तीन पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। समारोह के मेजबान शैख जासिम सईद भी मौके पर ही हलाक हो गये। इस धमाके में जख्मी होने वालों में चार पुलिस कर्मियों के अलावा सहावा मलेशिया के सात लोग भी शामिल है। इराक में दूसरा आत्मघाती धमाका भी उस समय हुआ जब एक हमलाआवर अपना बारूद से भरा ट्रक एक पुलिस स्टेशन में दे मारने की कोशिश में था। यह घटना मशहूर इराकी शहर मूसल से तीस किलोमीटर दूर अलमोला नामक गांव में हुई। पुलिसकर्मियों ने ट्रक पर फायरिंग शुरू कर दी जिस के बाद ट्रक ड्राईवर ने स्वयं को उड़ा दिया। इस घटना में पहले 7 लोगों के मरने की सूचना आयी है जबकि दस मकान भी धमाके के कारण तबाह हो गये हैं।

✦✦✦

हिज़्बुल्लाह और तहरीक अमल की मुत्तहदा कौमी हुकूमत की तश्कील पर ताकीद

हिजबुल्लाह और तहरीक अमल लिबनान ने मुत्तहदा कौमी हुकूमत के गठन के लिए लिबनानी ग्रुप के बीच आपसी भाइचारे पर ताकीद की है। बैरूत से अरना की रिपोर्ट के अनुसार हिज़्बुल्लाह और तहरीके अमल के पदाधिकारियों ने अपने बयान में सभी मलाह की सरबराही में लिब्नानकी मुत्तहदा कौमी हुकूमत के गठन में रूकावट की बिना पर लिबनान में पेश आने वाले बोहरान की जानिब इशारह करते हुए ताकीद की कि हुकूमत के गठन के साथ लिबनान की जनता की सेवा और देश की सुरक्षा उसी प्रकार माह मोहर्रम की आमद आमद पर मतभेद और मजहबी नफरत से दूरी पर ताकीद के साथ इसलामी शआयर के तकद्दुस और एहतराम पर ज़ोर दिया।

✦✦✦

इरान ने यूरेनियम की बीस फीसद तक अफ़्ज़ूदगी मोअत्तल नहीं की : अली अकबर सालेह

इरान की संस्था जौहरी तवानाई के सरबराह अली अकबर सालिही ने एलान किया कि ईरान ने यूरेनियम की बीस फीसद तक संवर्धन खत्म नहीं किया है इससे पहले पार्लियामेन्ट की कमेटी राष्ट्रीय सुरक्षा के तर्जुमान नक़वी हुसैनी ने एलान किया था कि ईरान ने यूरेनियम की बीस फीसद तक संवर्धन का कार्य रोक दिया। याद रहे कि ईरान की तरफ से यूरेनियम की उच्च्य सतह तक संवर्धन बन्द किया जाना 6 रुकनी सालिस ग्रुप का पहली मांग है। मगरबी देश तेहरान इन्तेजामिया से जौहरी प्रोग्राम पहले राकेने के लिए कह रहे थे और अब उसे और साफ सुथरा बनाने की मांग कर रहे हैं जिससे स्पष्ट हो गया कि जौहरी प्रोग्राम शान्तिमय है।